पाठ 12

कुंडलियाँ

(1)

दौलत पाय न कीजिए, सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को, ठाँऊ न रहत निदान।।
ठाँऊ न रहत निदान, जियत जग में जस लीजै।
मीठे वचन सुनाय, विनय सब ही की कीजै।।
कह गिरधर कविराय, अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निसि दिन चारि, रहत सब ही के दौलत।।

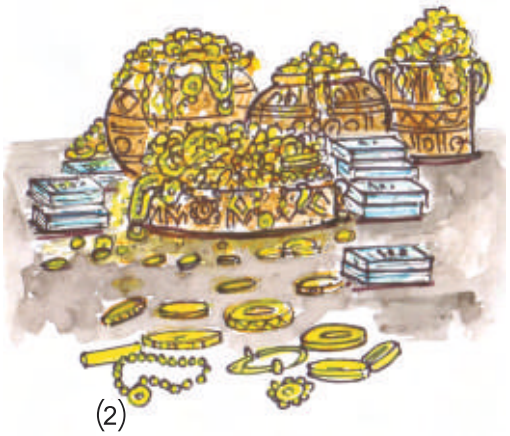

(2)

बिना बिचारे जो करै, सो पाछै पछताय।
काम बिगारे आपनो, जग में होत हँसाय।।
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पावै।
खान–पान सम्मान, राग–रँग मनहिं न भावै।।
कह गिरधर कविराय, दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत हैं जिय माहिं, करै जो बिना बिचारे।।

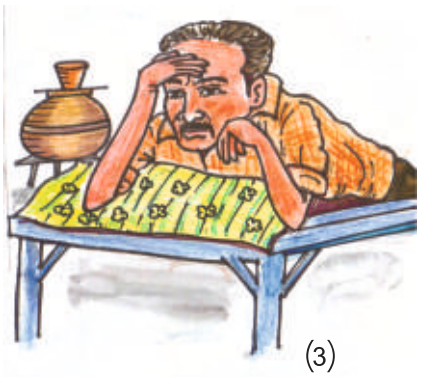

(3)

हीरा अपनी खानि को, बार–बार पछताय।
गुन–कीमत जाने नहीं, कहाँ बिकानो आय।।
कहाँ बिकानो आय, छेद करि कटि में बाँध्यो।
बिन हरदी बिन लौन, साग ज्यों फूहर राँध्यो।।
कह गिरधर कविराय, कहाँ लगि धरिये धीरा।
गुन–कीमत घटि गई, यहै कहि रोयो हीरा।।

(4)

लाठी में गुन बहुत है, सदा राखिए संग।
नदियाँ नाला जहाँ पड़ै, तहाँ बचावत अंग।।
तहाँ बचावत अंग, झपट कुत्ते को मारै।
दुश्मन, दामनगीर, ताही का मस्तक फारै।।
कह गिरधर कविराय, सुनो हे धुर के साठी।
सब हथियारन छोड़, हाथ में राखिए लाठी।।

गिरधर

शब्दार्थ

ठाँऊ न रहत	–	स्थिर नहीं रहता	तौलत	–	तौलती है
जिय माहिं	–	अपने मन में	खानि	–	घर, खान
फूहर	–	गँवार	टरत	–	टलना
पाहुन	–	मेहमान	मारै	–	मारना

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. कुंडलियाँ पाठ के लेखक का नाम बताइए।
2. "बिना विचारे जो ....." कुंडलियाँ को यदि हम जीवन में उतार लें, तो हमें क्या–क्या लाभ होगा?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. राँध्यो का अर्थ है–

   (क) सेकना (ख) पकाना

   (ग) रमना (घ) राग आलापना ( )

2. पाठ में 'पाछै' शब्द का अर्थ है–

   (क) पीछा करना (ख) पिछवाड़े रहना

   (ग) बाद में (घ) वापस करना ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. खान–पान सम्मान, ... मनहिं न भावै।
2. गुन ..... घटि गई, यहै कहि रोयो हीरा।
3. मीठे वचन ..... विनय, सब ही की कीजै।
4. नदियाँ–नाला जहाँ पड़ै, तहाँ ..... अंग।

अति लघूत्तरात्मक

1. दौलत पाकर मनुष्य को क्या न करने की सलाह दी गई?
2. आदमी की जग हँसाई कब होती है?
3. हीरा को छेद कर कमर में बाँधने पर हीरे को कैसा लगता है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. हीरा किस बात पर पछताने लगा?
2. कुंडलियाँ में लाठी के क्या–क्या गुण बताए गए हैं?
3. किसी काम को बिना सोचे–समझे करने पर क्या परिणाम होते हैं?
4. कवि गिरधर ने दौलत को मेहमान क्यों कहा है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न–

1. कुंडलियाँ ''हीरा अपनी खानि को, ... यहै कहि रोयो हीरा'' पंक्तियों की अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए।

भाषा की बात

1. ''पाहुन निसि–दिन चारि, रहत सब ही के दौलत'' में निसि–दिन से तात्पर्य निशा (रात) व दिन से है।

   उक्त 'कुंडलियाँ' पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

   यश, हँसाय, बिगाड़ना, सम्मान, गुण
2. दो या दो से अधिक पदों के मिलने से समास बनता है। समास का एक प्रकार है, द्वंद्व समास। इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं, जैसे :– माता और पिता = माता–पिता।

   इसमें 'और' शब्द का लोप होकर योजक चिह्न (–) आ जाता है। ऐसे ही द्वंद्व समास के दस उदाहरण लिखिए।
3. पाठ में आए निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

   जस, गुन, छेद, माथा
4. पाठ में आए निम्नलिखित कारकों के विभक्ति चिह्नों को लिखिए–

   1. अधिकरण कारक
   2. संबोधन कारक
   3. कर्मकारक
   4. संबंध कारक

पाठ से आगे

1. 'बातन हाथी पाइए, बातन हाथी पाँव' उक्ति पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. पाठ से संबंधित दोहे व पंक्तियों का संकलन कीजिए; जैसे–

   तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर ।

   वशीकरण एक मंत्र है, तजिए वचन कठोर ।।

यह भी करें

1. 'कुंडलियाँ' छंद के सस्वर वाचन का अभ्यास कीजिए और बाल–सभा में सुनाइए।
2. पाठ में लाठी के अनेक उपयोग बताए गए हैं। कक्षा में एक रूमाल रखकर बिना बोले हाव–भाव से प्रत्येक विद्यार्थी एक उपयोग बताएँ।

यह भी जानें

कुंडलियाँ छंद

जिस प्रकार साँप कुंडली लगाकर बैठता है तब उसके फन और पूँछ एक ही रेखा (सीध) में होते हैं, इसी प्रकार यह छंद जिस शब्द से प्रारंभ होता है, उसी शब्द पर ही आकर खत्म होता है। इसमें प्रथम दो पंक्तियाँ दोहे की और शेष चार पंक्तियाँ रोला छंद की होती हैं।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

''गुरु को अगर हमने देह रूप में माना तो हमने गुरु से ज्ञान नहीं अज्ञान पाया।''